By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 25, Sept.
September 28, 2020

पंचमहाभूतों की उत्पत्ति और प्रकृति से विकास के रूप

प्रकृति का दूसरा विकार अहंकार है। यह महत् तत्व का परिणाम है। अहंकार से पंचज्ञानेंद्रियां, पंचकर्मेंइंद्रियां, मन तथा पंचतन्मात्राओं की उत्त्पति होती है। अर्थात् अहंकार से एकादश इंद्रियों एवं पंचतनमात्राओं की उत्पत्ति होती है।

सांख्यकारिका में अहंकार से इन तत्वों की उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार प्राप्त होता है:- वैकारिक अहंकार से एकदश इंद्रिय (मन+पंच ज्ञानेंद्रिय+पंच कर्मेंइंद्रिय) की उत्त्पति होती है। भूतादि अहंकार से मंचतन्मात्राएं उत्पन्न होते हैं। इन्हें तन्मात्र इसीलिए कहते हैं, क्योंकि ये शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध के सूक्ष्म तत्व हैं। ये पाँच तन्मात्र हैं- शब्दतन्मात्र, स्पर्शतन्मात्र, रूपतन्मात्र, रस्तान्मात्र और गंधतन्मात्र। ये तन्मात्र अत्यंत सूक्ष्म होने के कारण प्रत्यक्ष द्वारा नहीं जाने जा सकते। हमें उनका ध्यान केवल अनुमान से होता है।

सांख्य दर्शन के अनुसार पंचतन्मात्राओं से पंचमहाभूत उत्पन्न होते हैं। पंचतन्मात्राओं से महाभूतों की उत्पत्ति के विषय में सांख्य दर्शन के भाष्यकारों में दो मत पाए जाते हैं। सांख्यकारिका के भाष्यकार गौड़पाद के अनुसार शब्द तन्मात्र से आकाश महाभूत की उत्पत्ति होती है, जिसका गुण शब्द है। स्पर्शतन्मात्र से वायु महाभूत की उत्पत्ति है, जिसका गुण स्पर्श है। रूप तन्मात्र से तेज महाभूत का आविर्भाव होता है जिसमें रूप गुण पाया जाता है। रस तन्मात्र से जल महाभूत और गंध तन्मात्र से पृथ्वी महाभूत उत्पन्न होते हैं जिनसे क्रमश: रास और गंध गुण उत्पन्न होते हैं।

किंतु वाचस्पति मिश्र गौड़पाद के दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हैं। उनके अनुसार शब्द तन्मात्र से आकाश महाभूत उत्पन्न होता है, जिसका गुण शब्द है। स्पर्श तन्मात्र+शब्दतन्मात्र से वायु महाभूत उत्पन्न होता है, जिसमें शब्द और स्पर्श गुण होता है। रूप तन्मात्र और शब्द-स्पर्श तन्मात्र से तेज महाभूत का आविर्भाव होता है, जिसमें रूप, स्पर्श और शब्द के गुण होते हैं। रसतन्मात्र+शब्द-स्पर्श-रूप तन्मात्राओं से जल महाभूत की उत्पत्ति होती है, जिसमें रस, शब्द, स्पर्श और रूपके गुण होते हैं। इसी प्रकार गंधतन्मात्र+शब्द-स्पर्श-रूप-रस-तन्मात्राओं से पृथ्वी महाभूत की उत्पत्ति होती है, जिसमें गंध, शब्द, स्पर्श, रूप और रस के गुण होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वाचस्पति मिश्र न्याय-वैशेषिक दर्शन के विचारों से प्रभावित हैं, जिनमें परमाणुओं में गुणात्मक भेज स्वीकार किया जाता है। ये पाँचों महाभूत स्थूल पदार्थ हैं।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 25, Sept.
September 28, 2020

विश्लेषण करने पर प्रकृति से महाभूतों की उत्पत्ति तक के विकास के दो रूप दिखाई पड़ते हैं:-

1. प्रत्यय सर्ग बुद्धि सर्ग और
2. तन्मात्र सर्ग या भौतिक सर्ग।

प्रत्यय सर्ग में बुद्धि, अहंकार और एकादश इंद्रियों का अविर्भाव होता है।

भौतिक सर्ग में पंच तन्मात्राओं और पंचमहाभूतों का विकास सम्मिलित है।
इनमें तन्मात्राएँ अप्रत्यक्ष होने के कारण और 'अविशेष' हैं और महाभूत तथा उनके विकार-रूप भौतिक द्रव्य विशेष धर्मों से युक्त होने के कारण 'विशेष' हैं।

पुन: विशेष द्रव्य तीन प्रकार के हैं -- महाभूत, स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर। स्थूल शरीर महाभूतों से निर्मित होता है। बुद्धि, अहंकार, एकादश इंद्रिय और तन्मात्राओं के समूह को सूक्ष्म शरीर कहते हैं। सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर पर आश्रित है। स्थूल शरीर के अभाव में सूक्ष्म शरीर की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। विज्ञान भिक्षु स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर के अतिरिक्त अधिष्ठान शरीर को भी मानते हैं, क्योंकि एक स्थूल शरीर से दूसरे स्थूल शरीर में सूक्ष्म शरीर का संक्रमण होने में अधिष्ठान शरीर अवलंबन होता है।